International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 461-464

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 461-464
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-11-2020
Accepted: 16-12-2020

डॉ. श्रीमति विनय सिंहल
एसोसिएटप्रोफेसर, आर. के. एस. डी. महाविद्यालय कैथल, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. श्रीमति विनय सिंहल
एसोसिएटप्रोफेसर, आर. के. एस. डी. महाविद्यालय कैथल, हरियाणा, भारत

वेदों में विकसित राष्ट्र की अवधारणा

डॉ. श्रीमति विनय सिंहल

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2021.v7.i1h.2565

सारांश
वेदों में राष्ट्र भावना आज भी प्रासंगिक है। वेदों में भारतीय राष्ट्र के विकास तथा विशिष्ट गुणों का अद्वितीय वर्णन है। वैदिक साहित्य के विभिन्न मंत्रों में "राष्ट्र" का वर्णन है। विश्व में "राष्ट्र" शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में किया गया है। आदर्श राष्ट्र जीवन की संकल्पना में व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन का बोध तथा आदर्श गुणों का वर्णन किया गया है। इसमें स्थान-स्थान पर राष्ट्र पुरुषों, राजाओं, सेनापतियों तथा विद्वानों को श्रेष्ठतम गुणों की वृद्धि तथा कर्तव्य का बोध कराया गया है। राजा हो अथवा प्रजा, सभी से राष्ट्र के प्रति कर्तव्य की पूर्ति का आह्वान है, न कि अधिकारों के अहंकारों की अभिव्यक्ति का। यदि वेदों के कुछ मंत्रों का ही अवलोकन करें तो वैदिक राष्ट्रवाद का सर्व कल्याणकारी बोध होता है। ऋग्वेद के दसवें मण्डल के अंतिम 191 वें मंत्र में समूचे राष्ट्र हेतु संगठन मंत्र दिया गया है। इसमें कहा गया है-

सं गच्छध्वं स वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते। (ऋग्वेद 10/191/2)

संक्षेप में ऋग्वेद में एक ऐसे सशक्त राष्ट्र की कल्पना की गई है जहां राष्ट्र के सदस्य एक दूसरे के सहायक व सहयोगी हों

अथर्ववेद के एक पूरे अध्याय (12वां उपसर्ग) के प्रथम 63 मंत्र तो राष्ट्र भावना को पूर्णतः समर्पित हैं। इसे पृथ्वी सूक्त अथवा भूमि सूक्त भी कहा गया है। प्रत्येक मंत्र राष्ट्र की जाग्रत भावना का द्योतक है, यह राष्ट्र वन्दना का मधुरतम संगीत है, जो हृदयंगम करने वाला है।

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में राष्ट्र के महत्व और राष्ट्रीय भावना का इतना स्पष्ट उपदेश होते हुए भी वर्तमान समय में हमारे देशवासियों में राष्ट्रीय भावना की बहुत कमी है जबकि भारतीय राष्ट्रवाद एक प्राचीन विश्वास प्रणाली है जिसमें मातृभूमि के प्रति गौरव तथा सेवा की भावना निहित है।युवा पीढ़ी को इस वास्तविकता से परिचित कराने के साथ-साथ व्यापक मानव कल्याण के लिए इसी मूल भावना के अनुरूप कार्य करने की भी अपेक्षा है।

कूटशब्दः राष्ट्र, राष्ट्रीय भावना, आपसी सहयोग,समता की भावना, मातृभूमि, राष्ट्रीय उत्थान, कर्तव्य, आपसी सहयोग व मित्रता की भावना राष्ट्र उत्थान के प्रति जागरूकता

प्रस्तावना
विश्व में प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद में राष्ट्र[1] शब्द का प्रयोग यह सिद्ध करता है कि राष्ट्र की अवधारणा का उदय स्थल भारत भूमि ही है। वैदिक साहित्य में राष्ट्र के साथ-साथ राष्ट्री[2], राष्ट्रिय[3] राष्ट्रभृत्य[4] आदि शब्दों का प्रयोग तत्कालीन राष्ट्रहितैषी शासन प्रणाली एवं राष्ट्र के प्रति अनेक भावनाओं का द्योतक है।

अथर्ववेद में राष्ट्रीय निर्माण एवं विकास का संपूर्ण चित्रण वर्णित है।' सा उद्क्रामत् सा गार्हपत्येन्यक्रामत्'[5] अर्थात विराट की उत्क्रांति से प्रथम अवस्था 'गृहपति' अर्थात परिवार नामक संस्था का स्वामी का निर्माण हुआ।तत्पश्चात 'सा उद्क्रामत् सा आहवनीयेन्क्रामत्' इस संस्था के उत्क्रांति से 'आहवानीय' नामक संस्था में हुई। जहां एक क्षेत्र में रहने वाले सब परिवारों के लोग एकत्रित होकर एवं समान हृदय होकर यज्ञ आदि कार्य करते और विचार-विमर्श भी करते। इसी क्रम में ग्राम सभाओं व पुनः राष्ट्र का निर्माण हुआ-

भद्रं इच्छन्तः ऋषयः स्वर्विदः तपोदीक्षां उपसेदुःअग्रे।
ततो राष्ट्रं बलं ओजश्च जातं तदस्मै देवाः उपसं नमन्तु।।[6]

अर्थात आत्मज्ञानी ऋषियोंने जगत कल्याण की इच्छा से सृष्टि के प्रारंभ में दीक्षा लेकर तप किया एवं राष्ट्र निर्माण किया वही बल व ओज भी प्रकट हुआ तथा सभी (राजा और प्रजा) राष्ट्र की नम्र भाव से सेवा करें ऐसी भावनाएं प्रकट हुई । ऐसे मंत्र सिद्ध करते हैं कि मातृभूमि पर समितियों समाजों ग्राम व राष्ट्र की प्रणाली वैदिक काल में पूर्णतया विकसित हो चुकी थी।

ये ग्रामा यदारण्यं या सभा अधिभूम्याम्।
ये संग्रामा समितयस्तेषु चारु वदेम ते।।[7]

इस मंत्र में परिवार ग्राम,सभा एवं समिति आदि अनेक संस्थाओं वाली मातृभूमि को नमन किया गया है। वैदिक राष्ट्र रचना अखंड मंडलाकार मानी गई है जो क्रमशः व्यक्ति व परिवार से आरंभ होकर समुदाय,समाज,राष्ट्र एवं विश्व में उत्तरोत्तर वृद्धि करती हुई 'स्वदेशोभुवनत्रयम्' अर्थात अखिल ब्रह्मांड को भी एक राष्ट्र मानने की भावना रखती है।जहां व्यक्ति, परिवार से लेकर ब्रह्मांड तक सभी इकाइयां अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और एक सूत्र में बंधी हुई निरंतर वर्धन करने वाली हैं।'यत्रविश्वंभवत्येकनीडम्' और 'वसुधैवकुटुंबकम्' जैसी श्रेष्ठ राष्ट्रीय भावनाओं का संदेश देने वाली वैदिक अवधारणा आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।'बृहदं राष्ट्रं संवेश्य दधातु'[8] में विशाल राष्ट्रीय के शांति दायक रूप में दीर्घकाल तक स्थिर होने के कामनाएं आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

'राष्ट्राणि वै विशः'[9] अर्थात राष्ट्र का निर्माण प्रजा से ही होता है -इन मंत्रों द्वारा वैदिक साहित्य भारत में सर्वाधिक प्राचीन प्रजातंत्र प्रणाली का संदेश देता है।'त्वां विशो वृणुतां राज्याय'[10] विशस्त्वा सर्वा वाञ्छतु'[11] आदि मंत्रों से स्पष्ट होता है कि प्रजा ही राजा का चुनाव करती थी। प्रजा की राजा के प्रति दृढ़ राज्य की कामनाएं तत्कालीन जनमानस की श्रेष्ठ राष्ट्रीय भावना को प्रकट करती हैं-

ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः।
ध्रुवं ते इन्द्रश्च अग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्।।[12]

अर्थात जिस राजा का वरण किया गया है, वह दृढ़रूप से राष्ट्र पर शासन करे।

वस्तुतः यह संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना वैदिक काल में था कि पुनः पुनः चुनाव या शासन व्यवस्था में नेताओं का बार-बार चुना जाना राष्ट्र के विकास में बाधक होता है।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि वैदिक काल में भी राष्ट्र की सभी संस्थाओं सभा समिति आदि के लोगों का एकमत होना बहुत ही महत्व की बात समझी जाती थी-

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसिजानताम्।

यह वैदिक संदेश आधुनिक राष्ट्र प्रणाली में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है इसी राष्ट्रीय भावना का संदेश हमारे ऋषियों ने अत्यंत प्राचीन काल में ही दे दिया था-

समानो मन्त्रः समितिः समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।[13]

राजा की राष्ट्रीय भावनाएं

राजा की राष्ट्रीय भावनाओं का वर्णन भी वैदिक साहित्य में पर्याप्त स्थानों पर प्राप्त होता है-'अहं राष्ट्रस्याभिवर्गे निजो भूयासमुत्तमम्'[14] राजा अपने राष्ट्र तथा स्वयं को उत्तम बनाने का संकल्प लेता है। सभा व समितियों से सहयोग की कामना भी करता है।'सभ्यं सभां मे पाहि'[15] अर्थात सभा मेरी रक्षा करें तथा सभा के सभ्य सदस्य भी मेरी रक्षा करें।

'ये ते के च सभासदस्ते मे सन्तु सवाचसः'[16] सभा के सभासद अविरोधी बातें करें।'सभा च समितिश्चावतां प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने ।येन संगच्छा उप मां स शिक्षाच्चारु वदानि पितरः संगतेषु' [17]। सभा और समिति प्रजापति की दो दुहिताएं हैं वह मुझे समुचित परामर्श प्रदान करें। इन मंत्रों से स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में राजा राष्ट्र उत्थान के लिए सभा एवं समितियों से समुचित परामर्श लेता था और उन्हें अनुकूल रखने की कामनाएं भी करता था।

निश्चित रूप से तत्कालीन शासन व्यवस्था में राजा तथा प्रमुख लोगों का एक मत होना, अविरोधी होना तथा न्याय प्रिय होना और राष्ट्र हित में ही कार्य करने की भावनाओं से पूर्ण वैदिक संदेश आज भी अनुकरणीय है।

राजा की राष्ट्रीय भावना अन्य स्थानों पर भी परिलक्षित होती है जब वह राष्ट्र के प्रमुख लोगों के साथ-साथ जनसाधारण से भी सहयोग की कामनाएं करता है-'ये धीवानो रथकाराः कर्मारा ये मनीषिणः।[18] अर्थात जो रथकार,धीवान,कर्मकार और मनीषिजन हैं वे सभी मेरा सहयोग करें।

राष्ट्रीय उत्थान के लिए वैदिक साहित्य का विशेष महत्व है जहां सभी व्यक्तियों को सामूहिक रूप से अपने राष्ट्र के उत्थान के लिए जागृत रहने की कामनाएं की गई हैं -वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिताः।[19]

प्रजा की राष्ट्रीय भावनाएं

ऋग्वेद में एक स्थान पर मातृभूमि से आशीर्वाद मांगा गया है कि राष्ट्र में सभी मनुष्य स्वस्थ रहे हैं सभी ज्ञान का अर्चन करें श्रेष्ठ कर्म करें और त्याग पूर्ण व्यक्ति बन व्यतीत करते हुए राष्ट्र के लिए प्राणों का बलिदान तक कर सकें।

उच्छंवचस्व पृथिवी मा नि बाधथा: सूपायनस्मै भव सूपकञ्चना। माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूमः उर्णूहि।[20] वेदों में कामनाएं की गई है कि हमारे राष्ट्र के सैनिक सैन्य विद्या में निपुण तथा शत्रुओं को संतप्त करने वाले महारथी हों।

> आ राष्ट्रे राजन्य: शूरः इषव्योऽतिव्याधि महारथो जायताम्।[21] वीरों के सम्मान की कामनाएं भी अनेक स्थानों पर प्राप्त होती हैं- 'नमोरथिभ्यो'[22] 'नरोऽस्माकमिन्द्ररथिनोजयन्तु'[23]

अर्थात हमारे प्रशस्त वीरों का सभी स्थानों पर सम्मान व सत्कार हो।

राष्ट्र के उत्थान में वेदों में निहित ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका दृष्टिगोचर होती है वेदों में राष्ट्रीय भावना की पराकाष्ठा प्राप्त होती है। जहां प्रत्येक मनुष्य को अपने सभी श्रेष्ठ कर्मों को मातृभूमि के उत्थान के लिए समर्पित करने का संदेश दिया जाता है-अप्रथयन पृथिवीमातरं वि।[24]

अथर्ववेद के भूमिसूक्त(12.1) के 63 मंत्रों में सभी प्राणियों की मातृभूमि की वंदना राष्ट्रीय भावना का सुंदर चित्रण प्रस्तुत करती है।'सानो भूमि त्विषिं बलं राष्ट्रे दयातूत्तमे'[25] अर्थात हमारी मातृभूमि हमारे राष्ट्र में तेज और बल को धारण करवाएं।'उप सर्प मातरं भूमिम्'[26] 'सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहाम्'[27] आदि मंत्रों में मातृभूमि को दयालु माता कहकर धेनु के समान सहस्त्रधाराओं के दोहन की प्रार्थनाएं की गई हैं।

'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः''[28] अर्थात मैं माता भूमि का पुत्र हूं और 'न हि माता पुत्रोहिनस्ति ना पुत्रोमातरम' अर्थात न तो माता अपने पुत्र को पीड़ा पहुंचाती है और ना ही पुत्र माता को 'पृथ्वी मातर्मा मा ही सीमोऽहं त्वां' पृथ्वी माता ना तो तुम मेरी हिंसा करो और ना ही मैं तुम्हारी हिंसा करूं।'सा नः माता भूमिः' आदि सैकड़ों मंत्र अपनी मातृभूमि के प्रति राष्ट्रीय भावना के द्योतक है।

वैदिक साहित्य में राष्ट्र को धारण करनेवाले 'इह राष्ट्रमु धारय'[30] 'राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्'[31] राष्ट्र को न गिरने देने तथा 'मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत'[33] तथा राष्ट्र के अनुकूल आचरण और व्यवहार करने के अनेक राष्ट्रीय संदेश हैं जिनकी वर्तमान में अत्यंत प्रासंगिकता है। वैदिक राष्ट्रगीत के नाम से विख्यात वैदिक मंत्रों में राष्ट्रीय के शैक्षिक, नैतिक सैन्य, आध्यात्मिक और सर्वविध उत्थान की सुंदर कामनाएं की गई हैं-

> आ ब्रह्मन् ब्राह्मणोब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यः अति
> व्याधी महारथो जायताम् दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरंध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो
> युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां
> निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु
> फलवत्यो न ओषधयःपच्यन्ताम्
> योगक्षेमो नः कल्पताम्।[33]

इस मंत्र में कामनाएं की गई हैं कि हमारे राष्ट्र में ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण, श्रेष्ठ क्षत्रिय, दुधारू गाय हृष्ट पुष्ट बैल और घोड़े हों।नारियां सुशील व कुलीन हों।योद्धा सभ्य हों और संपूर्ण राष्ट्र में समय के अनुरूप वृष्टि हो उत्तम औषधियां हो और प्रजा का सर्वविध कल्याण हो।

एकत्व की राष्ट्रीय भावना

हमारे देश में अनेक भाषाएं रीति-रिवाज संस्कृतियां,पंथ, धर्म और उपासना पद्धतियां हैं तथा हमारी राष्ट्र में वैदिक काल से ही सभी एक साथ इंद्रधनुष के समान एक हृदय,एक परिवार होकर रह रहे हैं। वेदों में इस अनेकता में एकता रूपी राष्ट्रीय भावना के अनेकों संदेश मिलते हैं-

> जनं विभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
> सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेण धेनुरनपस्फुरन्ती।।[34]

मंत्र में कामनाएं की गई है कि जिस पवित्र मातृभूमि पर अनेक धार्मिक मान्यताओं वाले विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले लोग एक परिवार के रूप में रहते हैं आप उन्हें ऐश्वर्य प्रदान करें।

वेद राष्ट्रीय उत्थान के लिए सभी लोगों को मैत्री भाव का सर्वश्रेष्ठ संदेश देता है।'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।'[35] -सभी एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें 'आयुष्मन्तः सहभक्षाः स्याम्'[36] - अर्थात सभी साथ मिलकर भोजन करें 'मा गृधः कस्यस्विद्धनम्'[37] -सभीत्याग भाव से जीवन जीएं।'पुमान्पुमांसं परिपातु विश्वतः।'[38] मनुष्य दृश्य रहित होकर एक दूसरे की रक्षा करें आप भी राष्ट्रीय संदेशों की वर्तमान के तनावपूर्ण वातावरण में अविलंब रूप से धारण करने के अत्यंत आवश्यकता है।

राष्ट्रीय भावना एवं राष्ट्रभक्ति का इससे बढ़कर उदाहरण और क्या होगा कि जहां जाती पाती से परे सीमाओं के बंधनों से परे सभी जिलों के सुख की कामनाएं नैतिक मूल्यों की स्थापना की कामनाएं की जाएं

> अस्मै वो अस्त्विन्द्रियमस्ये नृम्णयुत क्रतुरस्ये वर्चासि सन्तु वः।नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्यै।[39]

वर्तमान का भी यही आह्वाहन है कि हम अपने वेदों में वर्णित राष्ट्र की भावना को हृदय में धारण कर वि

वेदों द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर अग्रसर होते हुए अपने राष्ट्र के हित व उसके उत्थान हेतु कार्य करें और शिशु से लेकर वृद्ध तक सभी नई राष्ट्रीयहित की भावनाएं जागृत हों, यदि सभी भारतीयों में राष्ट्र के प्रति जागरूकता केंद्रित भावना उत्पन्न हो जाए तो भारत पुणे विश्वगुरु के स्थान को प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. ऋग्.10/173/1-2,5
2. ऋग्.10/12/3
3. मैत्रायणी संहिता 2.1.11
4. अथर्व.19.27.3
5. अथर्व.8.10.2
6. अथर्व.19.41.1
7. अथर्व 12.1.56
8. अथर्व 3.8.1
9. ऐतरेय ब्राह्मण 8.26
10. अथर्व.3.4.2
11. अथर्व.6.87.1
12. अथर्व.6.88.1-2
13. अथर्व.3.5.6-7
14. अथर्व.3.5.2
15. अथर्व.19.55.6
16. अथर्व.7.1.2
17. अथर्व.7.1.6.3
18. अथर्व.3.6-7
19. वाजसनेयीसंहिता 9.21-23
20. ऋग्वेद10.18.11
21. यजुर्वेद22.22
22. यजुर्वेद16.26
23. यजुर्वेद29.47
24. ऋग्वेद10.62.30
25. अथर्ववेद 18.1.8
26. ऋग्वेद10.18.10
27. अथर्व 12.1.19
28. अथर्व 12.1.10
29. शतपथ ब्राह्मण 5.4.3.20
30. ऋग्वेद10.173.2
31. वही 10.173.5
32. वही 10.173.1
33. शुक्ल यजुर्वेद 22.22
34. अथर्व.12.1.45
35. अथर्व.12.1.23
36. अथर्व.6.47.1
37. ईशावास्योपनिषद्1
38. ऋग्वेद6.75.14
39. यजुर्वेद9.22